SUSHANT UNIVERSITY ORGANIZED INTERNATIONAL CONFERENCE ON
"ADVANCES IN MULTIDISCIPLINARY RESEARCH AND INNVOATION" ICAMRI-2023
ON 28-29TH OCTOBER 2023
INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
July-December 2023, Submitted in October 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

विभिन्न सामाजिक स्तर वाले ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र से सम्बन्धित बालक–बालिकाओं में संवेगात्मक परिपक्वता के प्रभाव का विश्लेषण

Amit Kumar Kuldip, Research Scholar, Dept of Education, Maharaja Agrasen Himalayan Garhwal University
Dr Vibha Singh, Research Guide, Dept of Education, Maharaja Agrasen Himalayan Garhwal University

सार–

संसार में मनुष्य जिस भी वातावरण में रहता है उसकी जीवन शैली, उसकी सोच, उसकी व्यावहारिकता उस वातावरण के अनुसार बदल जाती है। यह एक मनोवैज्ञानिक सत्य है कि जिस भौगोलिक एवं सामाजिक परिवेश में व जिन शैक्षिक परिस्थितियों के मध्य रहकर शिक्षार्थी शिक्षा अर्जन करता है उन्हीं परिस्थितियों का प्रभाव बच्चे के ज्ञानात्मक, विचारात्मक, भावात्मक, चिन्तनात्मक तथा व्यवसायों के चयन आदि पर पड़ता है। छात्र शिक्षा–प्रक्रिया की एक महत्वपूर्ण इकाई हैं। भिन्न–भिन्न शिक्षा शास्त्रियों ने छात्रों के विकास के विषय में भिन्न–भिन्न विचार दिये हैं कुछ शिक्षा शास्त्रियों का कहना है कि यह उसकी रूचि एवं अभिरूचि पर निर्भर करता है, कुछ विचारकों का कहना है कि यह उसकी बुद्धि पर निर्भर करता है। परन्तु अनेक मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि परिवार ही छात्र के सामाजिक जीवन की प्रथम इकाई है, जिसके अन्तर्गत वह अपनी शारीरिक आवश्यकताओं के सम्पर्क में आता है जैसे स्नेह एवं सामाजीकरण से सम्बन्धित आवश्यकतायें होती हैं। प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों से स्तरित यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा चयन कर उसमें अध्ययनरत 150–150 बालक–बालिकाओं का चयन साधारण यादृच्छिक विधि से किया गया है।

प्रस्तावना–

सामान्यतया जब तक एक बालक विद्यालय में जाना प्रारम्भ नहीं कर देता है तब तक वह अपना सम्पूर्ण समय परिवार में ही व्यतीत करता है एवं जब वह किसी स्कूल में प्रवेश करता है तो अपना आधा समय मुश्किल से घर में व्यतीत करता है अन्यथा उसका समय समाज में ही व्यतीत होता है। 'परिवार' क्योंकि यह सभी मानवों से मिलकर बना है परिवार समाज का एक प्रभावशाली शिक्षक है। परिवार से सम्बन्धित विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न विचार व्यक्त किये हैं। कुछ समाज शास्त्रियों का कहना है कि परिवार एक ऐसा समूह है जहाँ निर्धारित यौन सम्बन्धों द्वारा शिशु उत्पन्न कर उनका पालन–पोषण किया जाता है। जबकि अन्य समाज शास्त्रियों ने परिवार को इस प्रकार से परिभाषित किया है कि उनके अनुसार परिवार का सम्बन्ध स्त्रियों, उनके बच्चों एवं उनके साथ एक व्यक्ति के होने से होता है जो उनकी देखभाल करता है। यह एक विस्तृत स्वीकार करने योग्य तथ्य है कि हमारे सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन में परिवार का एक केन्द्रीय स्थान है। परिवार व्यक्तियों के मध्य होने वाले अर्न्तसम्बन्धों की एक इकाई है। इस इकाई के अन्तर्गत प्रत्येक सदस्य की एक विशिष्ट भूमिका होती है एवं उसका एक अलग स्तर होता है। व्यक्ति अपने पारिवारिक सम्बन्धों के अनुसार ही अपने जीवन के सन्दर्भ में सोचना शुरू कर देता है, वह अपना जीवन एक असहाय नवजात शिशु से आरम्भ करता है, जब वह अपनी माता की गोद में होता है एवं बाल्यावस्था में वह स्वयं को प्रगतिशील एवं सुरक्षित महसूस करता है एवं स्वयं अपने परिवारजनों के माध्यम से निर्देशित पाता है। शिक्षा शास्त्रियों के द्वारा यह धारणा बना ली गई है कि परिवार ही प्रेम एवं स्नेह का केन्द्र बिन्दु है एवं यह बालक का प्रथम एवं सर्वोत्तम शिक्षा का संस्थान है। सीमैन ने परिवार की महत्ता का वर्णन इस प्रकार किया है–वह कहता है कि घर स्वर्ग की व्याख्या करता है, प्रारम्भकर्त्ताओं के लिए घर एक स्वर्ग है। वह अभिभावकों के द्वारा इन्द्रियाग्राही अनुभव को स्वयं के शब्दों में इस प्रकार व्यक्त करता है–''यह घर वह है जहाँ पूरे दिन शोर मचाते हुए बच्चे खेलते हैं।'' उसी सन्दर्भ में जब बच्चों से पूछा गया कि उनकी घर से सम्बन्धित क्या प्रतिक्रियाएँ हैं तो उन्होंने कहा सीमैन के अनुसार–''घर एक ऐसी जगह है जहाँ खिलौने हैं, टी0 वी0 है एवं सभी चीजें हैं।''

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

ज्ञानी (1999) में आत्म प्रत्यय के जीवनात्मक कारको के मध्य सह सम्बन्ध का अध्ययन किया। यह अध्ययन आगरा के विभिन्न माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 10 व कक्षा 12 के 1247 छात्रों के न्यादर्श पर यह अध्ययन

केन्द्रित था। उपकरण के रूप में भटनागर द्वारा विकसित'' मेरी धारणायें'' प्रश्नावली को उपकरण के रूप में प्रयोग किया गया। जिसमें निष्कर्ष निकला की भारतीय किशोरो के आत्म–प्रत्यय निर्धारण में जाति, छात्र, पीढी, पिता की शिक्षा व सामाजिक–आर्थिक तथा परिवार एक सार्थक भूमिका अदा करते है। सामान्य जाति के किशोरी में माता की शिक्षा, स्वत्व बोध निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है जबकि अनुसुचित जाति के किशोरी के स्वत्व बोध निर्धारण में शहरीकरण की भूमिका महत्वपूर्ण होती हैं।

जेनिफर एम0 (2005) ने अपने अध्ययन में पाया कि अल्टरनेटिव स्कूल के छात्रों के मध्य आत्मप्रत्यय पर आयु और लिंग भेद के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं। कौर एवं बाबा ने 1995 में शैक्षिक निश्पत्ति के एक सम्बन्ध के रूप में बुद्धि का अध्ययन किया। न्यादर्श के रूप में कक्षा 9 के 320 विद्यार्थियों को चुना गया व पाया गया कि बालकों और बालिकाओं कि सम्पूर्ण शैक्षिक उपलब्धि व अंग्रेजी व सामाजिक अध्ययन की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं था। गणित को छोड़कर उन्य सभी विषयों में बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि उच्च थी।

उपाध्याय व विक्रांत (2004) के अनुसार छात्र व छात्राओं के मध्य भावनात्मक स्थायित्व में सार्थक अन्तर पाया गया। इनके अध्ययन के अनुसार छात्रों में छात्राओं की अपेक्षा अधिक भावात्मक स्थायित्व था। साथ ही छात्र छात्राओं के मध्य शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक अंतर था।

पाल तथा खान (2018) ने छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अनुसन्धानकर्ता ने अध्ययन के उद्देश्य और साधनों की प्रकृति को द्रष्टिगत रखते हुए अनुसन्धान की'' वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि'' का प्रयोग किया है।

कम्पनी, एम. कम्पनी, एम.(2019)'' शिक्षा में मानवीय मूल्य अवधारणा एवं अनुप्रयोग)'' शिक्षा में मानवीय मूल्य अवधारणा एवं अनुप्रयोग'' शिक्षा में मानवीय मूल्य अवधारणा एवं अनुप्रयोग'' विषय पर पी. एच. डी. शोध कार्य किया और निष्कर्ष निकाला कि –मानवीय–मूल्यों के शिक्षण हेतु जो सर्वाधिक प्रयुक्त प्रविधि हो, उसे प्रत्यक्ष विधि बनाने से विद्यार्थियों में मानवीय मूल्य सहजता से विकसित होते है। अनुसंधानकर्ता ने इस संबंध में आदर्श पाठ्यक्रम बनाने का सुझाव भी अपने अध्ययन के माध्यम से दिया।

प्रिन्स (2017)'' अनुसुचित जाति के छात्रो के लिंगभेद एवं सामाजिक)'' अनुसुचित जाति के छात्रो के लिंगभेद एवं सामाजिक, आर्थिक आर्थिक स्तर के आधार पर आकांक्षा स्तर का अध्ययन।'' विषय पर स्तर के आधार पर आकांक्षा स्तर का अध्ययन।'' पी. एच. डी. स्तरीय शोध कार्य किया और निष्कर्ष स्वरूप पाया कि अनुसूचित जाति के छात्रों को आकांक्षा स्तर अधिक था ओर छात्राओं का आकांक्षा स्तर औसत था। उनके सामाजिक–आर्थिक स्तर, शैक्षिक उपलब्धि तथा आकांक्षा स्तर में घनिष्ठ सम्बन्ध पाया गया।

आशादेवी (2019) ने ''पिछड़े वर्ग से सम्बन्धित किशोर छात्राओं की बौद्धिक एवं शैक्षिक समस्याओं का अन्वेषण'' विषय पर शोधकार्य कर यह ज्ञात किया कि ये छात्राऐं अपने स्वास्थ्य, आर्थिक स्थिति, अध्ययन सामग्री, दूसरों के साथ मिलने–जुलने, भूलने की आदत तथा संवेगात्मक अस्थिरता से चिन्तित रहती हैं।

पाण्डे, बी. पाण्डे, बी. बी. (2019) ने –''किशोर लड़कों की समायोजन समस्याओं ने–''किशोर लड़कों की समायोजन समस्याओं तथा उनके शैक्षणिक प्रभाव का अध्ययन।'' विषय पर पी– एच. डी. स्तरीय शोध अध्ययन किया और निष्कर्ष में पाया कि–ग्रामीण विद्यार्थियों ने भावात्मक, स्वास्थ्य तथा विद्यालयी समायोजन क्षेत्र में, उच्च अंक प्राप्त किये। शहरी विद्यार्थियों ने तुलनात्मक रूप से सौन्दर्य समायोजन क्षेत्र में अच्छे अंक प्राप्त किये। समायोजन, प्रशंसा का स्तर तथा उपलब्धि के मध्य सार्थक सम्बन्ध पाया गया। ग्रामीण विद्यार्थी विद्यालयी समायोजन, स्वास्थ्य तथा भावात्मक क्षेत्रों में कठिनाई का अनुभव करते हैं।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व–

पारिवारिक, सामाजिक एवं आर्थिक पहलू आज के विद्यार्थी को विशेष रूप से प्रभावित करते हैं। सामाजिक एवं आर्थिक पहलू सम्बन्धी पारिवारिक मूल्यों के सम्बन्ध में अध्ययन करने पर पता चलता है कि ये मूल्य एवं परिवेश बालकों एवं बालिकाओं को किस सीमा तक प्रभावित कर रहे हैं। ये पहलू छात्र–छात्रा के व्यक्तित्व के विकास में मुख्य भूमिका निभाते हैं। ये तत्व आन्तरिक रूप से एक–दूसरे से सम्बन्धित होते हैं एवं साथ ही वातावरण से मिले होने के साथ ही बालक–बालिका के विकास को अन्तिम रूप देने में सहायक सिद्ध होते हैं। आजकल बहुत बड़ी संख्या में विद्यार्थी हिंसा, अनुशासनहीनता एवं असामाजिक व्यवहारों को अपना,

INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
July-December 2023, Submitted in October 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

विद्यालय का वातावरण भी प्रदूषित कर रहे हैं। इसलिए शिक्षक एवं शिक्षाविद् इन विद्यार्थियों की ओर अपना ध्यान आकर्षित कर यह पता लगाने का प्रयत्न कर रहे हैं कि उनकी क्रियाओं के पीछे वे कौन सी दशायें हैं जो विद्यार्थियों को इन क्रियाओं को करने के लिए उत्साहित कर रही है।

संवेगात्मक परिपक्वता मापनी–

अध्ययन के अन्तर्गत प्रयुक्त संवेगात्मक परिपक्वता मापनी का निर्माण यशवीर सिंह एवं महेश भार्गव द्वारा (1984) में किया गया। प्रस्तुत मापनी में संवेगात्मक परिपक्वता से सम्बन्धित विभिन्न विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कुल 20 कथनों को शामिल किया गया है। मापनी में प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति, उपलब्धि एवं अभियोग्यता के प्रति जागरूकता, जीवन के प्रति आशान्वित दृष्टिकोण, आदि तथ्यों को समाहित किया गया है। जिसके आधार पर मापनी में महत्वपूर्ण तथ्यों यथा संवेगात्मक अस्थिरता तथा संवेगात्मक दमन के आधार पर उपविमाओं का निर्धारण किया गया है। प्रत्येक उपविमा के लिए कथनों की संख्या अलग–अलग है। जिसे तालिका संख्या–01 से प्रदर्शित किया गया है।

तालिका संख्या–1

सांवेगिक परिपक्वता मापनी की उपविमाएँ

क्रम संख्या	**उपविमाएं**	**कथन**
1	संवेगात्मक अस्थिरता	10
2	संवेगात्मक दमन	20
	कुल कथन संख्या–	**20**

सारणी अर्थापन एवं विश्लेषण–

तालिका संख्या –2

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र से सम्बन्धित बालकों द्वारा संवेगात्मक परिपक्वता मापनी पर प्राप्त प्राप्तांकों का विवरण

उपमानी	**समूह**	**संख्या**	**मध्यमान**	**मा0 विचलन**	**डी0एफ**	**''टी'' मूल्य**	**सार्थकता स्तर**
ई0एम0–0.01	बालक	150	21.25	6.219	298	6.552	0.01
	बालिका	150	17.13	4.543			
ई0एम0–0.02	बालक	150	24.43	6.006	298	9.781	0.01
	बालिका	150	18.46	4.458			
ई0एम0–0.03	बालक	150	21.73	6.941	298	8.350	0.01
	बालिका	150	16.15	4.336			
ई0एम0–0.04	बालक	150	19.41	6.750	298	8.661	0.01
	बालिका	150	13.93	3.808			
ई0एम0–0.05	बालक	150	18.66	6.040	298	7.022	0.01
	बालिका	150	14.26	4.735			

तालिका संख्या–2 के आधार पर संवेगात्मक परिपक्वता मापनी पर ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र से सम्बन्धित किशोर बालकों द्वारा प्राप्त प्राप्तांकों का विवेचन निम्न है–

मापनी की उपविमा (सांवेगिक अस्थिरता, ई0एम0–0.01) पर ग्रामीण क्षेत्र से सम्बन्धित 150 किशोर बालकों द्वारा मध्यमान 21.25 एवं मानक विचलन 6.219 प्राप्त किया गया। जबकि शहरी क्षेत्र से सम्बन्धित 150 किशोर बालकों द्वारा मध्यमान 17.13 एवं मानक विचलन 4.543 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए ''टी'' परीक्षण ज्ञात करने पर 'टी' का मान 6.552 पाया गया, जो 298 स्वतन्त्रता अंश के .01 विश्वास स्तर पर परिणाम की सार्थकता को स्पष्ट करता है।

मापनी की उपविमा (सांवेगिक दमन, ई0एम0–0.02) पर ग्रामीण क्षेत्र से सम्बन्धित 150 किशोर बालकों का मध्यमान 24.43 एवं मानक विचलन 6.006 है। जबकि शहरी क्षेत्र से सम्बन्धित 150 किशोर बालकों द्वारा मध्यमान 18.46 एवं मानक विचलन 4.458 प्राप्त किया गया। दोनों समूहों के मध्यमानों में अन्तर की

सार्थकता ज्ञात करने के लिए ''टी'' परीक्षण किया गया और ''टी'' का मान 9.781 पाया गया, जो 298 स्वतन्त्रता अंश के .01 विश्वास स्तर पर सार्थक है।

मापनी की उपविमा (सामाजिक कुसमायोजन, ई0एम0–0.03) पर ग्रामीण क्षेत्र से सम्बन्धित 150 किशोर बालकों द्वारा मध्यमान 21.73 एवं मानक विचलन 6.941 प्राप्त हुआ। जबकि शहरी क्षेत्र से सम्बन्धित 150 किशोर बालकों द्वारा मध्यमान 16.15 एवं मानक विचलन 4.336 प्राप्त किया गया। दोनों समूहों के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए ''टी'' परीक्षण ज्ञात करने पर 'टी' का मान 8.350 पाया गया, जो 298 स्वतन्त्रता अंश के .01 विश्वास स्तर पर परिणाम की सार्थकता को स्पष्ट करता है।

मापनी की उपविमा (व्यक्तित्व विघटन, ई0एम0–0.04) पर शहरी क्षेत्र से सम्बन्धित 150 किशोर बालकों द्वारा मध्यमान 19.41 एवं मानक विचलन 6.750 प्राप्त किया। जबकि 150 शहरी क्षेत्र से सम्बन्धित 150 किशोर बालकों ने मध्यमान 13.93 एवं मानक विचलन 3.808 प्राप्त किया। दोनों समूहों के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए ''टी'' परीक्षण का मान 8.661 पाया गया, जो 298 स्वतन्त्रता अंश के .01 विश्वास स्तर पर सार्थक है।

मापनी की उपविमा (नेतृत्व हीनता, ई0एम0–0.05) पर ग्रामीण क्षेत्र से सम्बन्धित 150 किशोर बालकों ने मध्यमान 18.66 एवं मानक विचलन 6.040 प्राप्त किया। जबकि शहरी क्षेत्र से सम्बन्धित 150 किशोर बालकों ने मध्यमान 14.26 एवं मानक विचलन 4.735 प्राप्त किया गया। दोनों समूहों के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए ''टी'' परीक्षण किया गया, जिसका मान 7.022 पाया गया। जो 298 स्वतन्त्रता अंश के .01 विश्वास स्तर पर परिणाम की सार्थकता को स्पष्ट करता है।

तालिका संख्या–3

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र से सम्बन्धित बालिकाओं द्वारा संवेगात्मक परिपक्वता मापनी पर प्राप्त प्राप्तांकों का विवरण

उपमानी	समूह	संख्या	मध्यमान	मा0 विचलन	डी0एफ	''टी'' मूल्य	सार्थकता स्तर
ई0एम0–0.01	शहरी	150	20.65	5.904	298	2.856	ण01
	ग्रामीण	150	22.69	6.417			
ई0एम0–0.02	शहरी	150	21.49	5.938	298	4.511	.01
	ग्रामीण	150	24.69	6.343			
ई0एम0–0.03	शहरी	150	17.92	5.044	298	4.530	.01
	ग्रामीण	150	20.73	5.670			
ई0एम0–0.04	शहरी	150	16.39	5.315	298	4.740	.01
	ग्रामीण	150	19.55	6.176			
ई0एम0–0.05	शहरी	150	15.63	5.867	298	3.577	.01
	ग्रामीण	150	18.12	6.169			

तालिका संख्या–3 के आधार पर संवेगात्मक परिपक्वता मापनी पर ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र से सम्बन्धित किशोर बालकों द्वारा प्राप्त प्राप्तांकों का विवेचन निम्न है–

मापनी की उपविमा (सांवेगिक अस्थिरता, ई0एम0–0.01) पर ग्रामीण क्षेत्र के 150 किशोर बालिकाओं द्वारा मध्यमान 20.65 एवं मानक विचलन 5.904 प्राप्त हुआ। जबकि शहरी क्षेत्र से सम्बन्धित 150 किशोर बालिकाओं द्वारा मध्यमान 22.69 एवं मानक विचलन 6.417 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए ''टी'' परीक्षण किया गया, जिसका मान 2.856 है। जो 298 स्वतन्त्रता अंश के .01 विकास स्तर पर परिणाम की सार्थकता को स्पष्ट करता है।

मापनी की उपविमा (सांवेगिक दमन, ई0एम0–0.02) पर ग्रामीण क्षेत्र से सम्बन्धित 150 किशोर बालिकाओं का मध्यमान 21.49 एवं मानक विचलन 5.938 प्राप्त हुआ। जबकि शहरी क्षेत्र से सम्बन्धित 150 किशोर बालिकाओं का मध्यमान 24.69 एवं मानक विचलन 6.343 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्यमान प्राप्तांकों में

अन्तर की सार्थकता के परीक्षण के लिए ''टी'' परीक्षण ज्ञात करने पर 'टी' का मान 4.511 प्राप्त हुआ, 298 स्वतन्त्रता अंश के .01 विश्वास स्तर पर परिणाम की सार्थकता को स्पष्ट करता है।

मापनी की उपविमा (सामाजिक कुसमायोजन, ई0एम0–0.03) पर ग्रामीण क्षेत्र से सम्बन्धित 150 किशोर बालिकाओं द्वारा मध्यमान 17.92 एवं मानक विचलन 5.044 प्राप्त हुआ। जबकि शहरी क्षेत्र से सम्बन्धित 150 किशोर बालिकाओं ने मध्यमान 20.73 एवं मानक विचलन 5.670 प्राप्त किया। दोनों समूहों के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए ''टी'' परीक्षण सांख्यिकीय का प्रयोग किया गया। प्राप्त 'टी' का मान 4.530 है। जो 298 स्वतन्त्रता अंश के .01 विश्वास स्तर पर परिणाम की सार्थकता को स्पष्ट करता है।

मापनी की उपविमा (व्यक्तित्व विघटन, ई0एम0–0.04) पर ग्रामीण क्षेत्र से सम्बन्धित 150 किशोर बालिकाओं का मध्यमान 16.39 एवं मानक विचलन 5.315 है। जबकि शहरी क्षेत्र से सम्बन्धित 150 किशोर बालिकाओं द्वारा मध्यमान 19.55 एवं मानक विचलन 6.176 है। दोनों समूहों के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए प्राप्त ''टी'' का मान 4.740 पाया गया। जो 298 स्वतन्त्रता अंश के .01 विश्वास स्तर पर परिणाम की सार्थकता को स्पष्ट करता है।

मापनी की उपविमा (नेतृत्व हीनता, ई0एम0–0.05) पर ग्रामीण क्षेत्र से सम्बन्धित 150 किशोर बालिकाओं ने मध्यमान 15.63 एवं मानक विचलन 5.867 प्राप्त किया। जबकि शहरी क्षेत्र से सम्बन्धित 150 किशोर बालिकाओं द्वारा मध्यमान 18.12 एवं मानक विचलन 6.169 प्राप्त किया गया। दोनों समूहों के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता का परीक्षण करने पर प्राप्त 'टी' का मान 3.577 है। जो 298 स्वतन्त्रता अंश के .01 विश्वास स्तर पर परिणाम की सार्थकता को स्पष्ट करता है।

तालिका संख्या–4

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र से सम्बन्धित सभी बालक एवं बालिकाओं द्वारा संवेगात्मक परिपक्वता मापनी पर प्राप्त प्राप्तांकों का विवरण

उपमानी	क्षेत्र	समूह	संख्या	मध्यमान	मा0 विचलन	डी0 एफ	''टी'' मूल्य	सार्थकता स्तर
ई0एम0–0.01	ग्रामीण	बालक / बालिका	300	19.19	5.815	598	5.029	.01
	शहरी	बालक / बालिका	300	21.67	6.239			
ई0एम0–0.02	ग्रामीण	बालक / बालिका	300	21.45	6.069	598	3.250	.01
	शहरी	बालक / बालिका	300	23.09	6.339			
ई0एम0–0.03	ग्रामीण	बालक / बालिका	300	18.94	6.418	598	.776	NS
	शहरी	बालक / बालिका	300	19.32	6.538			
ई0एम0–0.04	ग्रामीण	बालक / बालिका	300	16.67	6.120	598	2.641	.05
	शहरी	बालक / बालिका	300	17.97	5.965			
ई0एम0–0.05	ग्रामीण	बालक / बालिका	300	16.46	5.849	598	.851	NS
	शहरी	बालक / बालिका	300	16.88	6.137			

तालिका संख्या–4 के आधार पर संवेगात्मक परिपक्वता मापनी पर ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र से सम्बन्धित किशोर बालक एवं बालिकाओं द्वारा प्राप्त प्राप्तांकों का विवेचन निम्नवत् है–

मापनी की उपविमा (सांवेगिक अस्थिरता, ई0एम0–0.01) पर ग्रामीण क्षेत्र से सम्बन्धित 300 किशोर बालक एवं बालिकाओं का मध्यमान 19.19 एवं मानक विचलन 5.815 है। जबकि शहरी क्षेत्र से सम्बन्धित 300 किशोर बालक एवं बालिकाओं द्वारा मध्यमान 21.67 एवं मानक विचलन 6.239 प्राप्त किया गया। दोनों समूहों के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए ''टी'' परीक्षण ज्ञात करने पर ''टी'' का मान 5.029 पाया गया। जो 598 स्वतन्त्रता अंश के .01 विश्वास स्तर पर सार्थक है।

मापनी की उपविमा (सांवेगिक दमन, ई0एम0–0.02) पर ग्रामीण क्षेत्र से सम्बन्धित 300 किशोर बालक एवं बालिकाओं द्वारा मध्यमान 21.45 एवं मानक विचलन 6.069 प्राप्त किया। जबकि शहरी क्षेत्र से सम्बन्धित 300 किशोर बालक एवं बालिकाओं द्वारा मध्यमान 23.09 एवं मानक विचलन 6.339 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए प्राप्त ''टी'' का मान 3.250 अंक पाया गया। जो 598 स्वतन्त्रता अंश के लिए .01 विश्वास स्तर पर परिणाम की सार्थकता को प्रदर्शित करता है।

SUSHANT UNIVERSITY ORGANIZED INTERNATIONAL CONFERENCE ON
"ADVANCES IN MULTIDISCIPLINARY RESEARCH AND INNVOATION" ICAMRI-2023
ON 28-29TH OCTOBER 2023
INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
July-December 2023, Submitted in October 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

मापनी की उपविमा (सामाजिक कुसमायोजन, ई0एम0—0.03) पर ग्रामीण क्षेत्र से सम्बन्धित 300 किशोर बालक एवं बालिकाओं का मध्यमान 18.94 एवं मानक विचलन 6.418 है। जबकि शहरी क्षेत्र से सम्बन्धित 300 किशोर बालक एवं बालिकाओं का मध्यमान 19.32 एवं मानक विचलन 6.538 है। दोनों समूहों के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए ''टी'' परीक्षण का प्रयाग किया गया। ''टी'' का मान .776 है। जो 598 स्वतन्त्रता अंश के .01 एवं .05 विश्वास स्तर पर परिणाम की सार्थकता को स्पष्ट नहीं करता है।

मापनी की उपविमा (व्यक्तित्व विघटन, ई0एम0—0.04) पर ग्रामीण क्षेत्र से सम्बन्धित 300 किशोर बालक एवं बालिकाओं ने मध्यमान 16.67 एवं मानक विचलन 6.120 प्राप्त किया। जबकि 300 शहरी किशोर बालक एवं बालिकाओं का मध्यमान 17.97 एवं मानक विचलन 5.985 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता के लिए ''टी'' परीक्षण ज्ञात किया गया। जिसका मान 2.641 है। जो 598 स्वतन्त्रता अंश के .05 विश्वास स्तर पर सार्थक है।

मापनी की उपविमा (नेतृत्व हीनता, ई0एम0—0.05) पर ग्रामीण क्षेत्र से सम्बन्धित 300 किशोर बालक एवं बालिकाओं का मध्यमान 16.46 एवं मानक विचलन 5.845 प्राप्त किया। जबकि 300 शहरी किशोर बालक एवं बालिकाओं द्वारा मध्यमान 16.98 एवं मानक विचलन 6.137 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता के लिए ''टी'' परीक्षण ज्ञात करने पर ''टी'' का मान .851 प्राप्त हुआ। जो 598 स्वतन्त्रता अंश के .01 विश्वास स्तर पर अन्तर की सार्थकता की पुष्टि नहीं करता है।

अतः उपर्युक्त के आधार पर हमारी परिकल्पना संख्या 10 ''संवेगात्मक परिपक्वता मापनी पर ग्रामीण क्षेत्र से सम्बन्धित सम्मिलित रूप से सभी किशोर बालक एवं बालिकाओं द्वारा प्राप्त प्राप्तांक, शहरी क्षेत्र से सम्बन्धित सम्मिलित रूप से सभी किशोर बालक एवं बालिकाओं द्वारा प्राप्त प्राप्तांकों की अपेक्षा अधिक होगा'' की पुष्टि मापनी की दो उपविमाओं (सामाजिक कुसमायोजन, ई0एम0—0.03 एवं नेतृत्व हीनता, ई0एम0—0.05) पर नहीं पायी गयी। शेष तीनों उपमापनियों (सांवेगिक अस्थिरता, ई0एम0—0.01, सांवेगिक दमन, ई0एम0—0.02, एवं व्यक्तित्व विघटन— ई0एम0—0.04) पर पुष्टि नहीं होती, क्योंकि शहरी क्षेत्र के बालक—बालिकाओं का सम्मिलित रूप से मध्यमान ग्रामीण क्षेत्र के बालक—बालिकाओं के मध्यमान से अधिक है।

निष्कर्ष—

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र से चयनित किशोर बालक एवं बालिकाओं द्वारा प्राप्त प्राप्तांकों में पर्याप्त अन्तर पाया गया है। मापनी की उप मापनियों पर प्राप्त परिणामों से स्पष्ट है, कि ग्रामीण बालक एवं बालिकाओं द्वारा उपमापनी संवेगात्मक दमन, सामाजिक कुसमायोजन, व्यक्तित्व विघटन एवं नेतृत्व हीनता पर .01 विश्वास स्तर पर सार्थक अन्तर प्राप्त किया गया। वही संवेगात्मक अस्थिरता उपमापनी पर दोनों समूहों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। दूसरी ओर शहरी क्षेत्र के किशोर बालक एवं बालिकाओं द्वारा उपमापनी संवेगात्मक अस्थिरता, संवेगात्मक दमन, सामाजिक कुसमायोजन, व्यक्तित्व विघटन एवं नेतृत्व हीनता पर सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की बालिकाओं द्वारा उपमापनी संवेगात्मक अस्थिरता, संवेगात्मक दमन, सामाजिक कुसमायोजन, व्यक्तित्व विघटन एवं नेतृत्व हीनता पर सार्थक अन्तर प्राप्त किया गया। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र से सम्बन्धित सभी किशोर बालक एवं बालिकाओं द्वारा मापनी की उपविमा संवेगात्मक अस्थिरता एवं संवेगात्मक दमन पर सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ। जबकि मापनी की उपविमा सामाजिक कुसमायोजन एवं नेतृत्व हीनता पर दोनों समूहों के बालक एवं बालिकाओं में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। मापनी की उपविमा व्यक्तित्व विघटन पर दोनों समूहों के बालक एवं बालिकाओं में सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ।

उपर्युक्त के आधार पर स्पष्ट है कि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के किशोर बालक एवं बालिकाओं द्वारा प्राप्त प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर विद्यमान हैं। जिससे यह सिद्ध होता है कि ग्रामीण क्षेत्र के बालक एवं बालिकाओं की अपेक्षा शहरी क्षेत्र के बालक और बालिकाओं में संवेगात्मक अस्थिरता व सामाजिक कुसमायोजन की प्रवृत्ति अधिक पायी जाती है, तथा ग्रामीण क्षेत्र के बालक एवं बालिकाओं में व्यक्तित्व विघटन एवं संवेगात्मक दमन की प्रवृत्ति अपेक्षाकृत अधिक होती है। जबकि नेतृत्व हीनता की प्रवृत्ति दोनों समूहों में समान रूप से पायी गयी है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

- गवर्नमेंट ऑफ इडिया, 2001. एजुकेशन गारंटी स्कीम एण्ड इन्नोवेटिव एजुकेशन, डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशन, एम.एच.आर.डी., नई दिल्ली (हिंदी संस्करण)
- गुप्ता, वी.पी. 1997. इवेल्युएशन ऑफ अल्टरनेटिव स्कूलिंग, प्रोजेक्ट रिपोर्ट ऑफ आर.जी.पी.एस.एम. आर. आई.ई.च भोपाल, मध्य प्रदेश।
- न्यूपा. 2006. एलीमेंट्री एजुकेशन इन इण्डिया, प्रोग्रेस टुवर्ड्स यू०ई०ई० फ्लैश स्टैटस्टेटिक्स (2005–06), डी.आई.एस.ई., न्यूपा, नई दिल्ली।
- साहू. जी.एन 1998. ए स्टडी ऑफ कद हिस्ट्री एण्ड डेवलपमेंट ऑफ अल्टरनेटिव स्कूल्स, डी.ए.वी.वी., इन्दौर, म.प्र.।
- आशा देवी 2019, 'फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन' एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली।
- राजेन्द्र 1997. स्पेशियल ऑगेनाइजेशन ऑफ एजुकेशन फेसलिटीज एण्ड स्ट्रेटिजी फॉर प्लानिंग इन रोहतक डिस्ट्रिक्ट, पीएचच.डी थीसिस (इन न्योग्रा), महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक.
- मिश्रा, एस. 2018. कम्पेयरिंग पैटर्न ऑफ अल्टरनेटिव स्कूल विद देट ऑफ नॉन–डी. पी.ई.पी. स्कूल्स इन ट्राइबल एरिया, डी.ए.वी.वी., इन्दौर.
- द्विवेदी, आर.एस.एण्ड शर्मा, जे.पी 1997. एन इवेल्यूएशन स्टडी आफ द अल्टरनेटिव स्कूलिंग प्रोग्राम इन म.प्र. रिपोर्ट, एन.सी.ई.आर.टी. भोपाल, म.प्र.
- मानव संसाधन विकास मंत्रालय, 2005–06 एनुअल रिपोर्ट 2005–06 'डिपार्टमेट ऑफ एलीमेंट्री एजुकेशन एण्ड लिटरेसी', मानव संसाधान विकास मंत्रालय, नई दिल्ली।
- पाल तथा खान, 2018. 'शिक्षा अनुसंधान की कार्यप्रणाली', विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा०लि०, नई दिल्ली।